International Journal of Applied Research 2015; 1(9): 249-252

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(10): 249-252
www.allresearchjournal.com
Received: 16-07-2015
Accepted: 15-08-2015

रेणु कुमारी राजपूत
शोधार्थी,संस्कृत विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया
विश्वविद्यालय, उदयपुर; राज.)
313001

Correspondence
रेणु कुमारी राजपूत
शोधार्थी,संस्कृत विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया
विश्वविद्यालय, उदयपुर; राज.)
313001

हनुमन्नाटकम् में वर्णित रस–स्वरूप विवेचन

रेणु कुमारी राजपूत

सार – भारतीय साहित्यशास्त्र में 'रस' की विधा का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह भारतीय साहित्यशास्त्र का मेरूदण्ड ही नहीं, उसकी महती प्रतिष्ठा भी है। आचार्य भरतमुनि को 'रस सिद्धान्त' के प्रतिष्ठापक आचार्य माने जाते है। आचार्य भरतमुनि के अनुसार भारतीय नाट्यकला में रसशून्य का न तो कोई स्थान है और न कोई प्रयोजन ही है –

''न हि रसादृते कश्चिदप्यर्थः प्रवर्तते।''[1]

अर्थात् रस के बिना किसी भी अर्थ का प्रवर्तन काव्य में नहीं होता है। भरतमुनि का नाट्यशास्त्र में रसाभिव्यक्ति को अत्यन्त वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करते हुए रस सूत्र दिया है –

''विभावानुभाव व्यभिचारि संयोगाद्रसनिष्पतिः।''[2]

अर्थात् विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। रस के संदर्भ में भरतमुनि का कथन है कि नट नटी आदि पात्र नाट्य में भावों तथा रसों का आश्रय लेकर अभिनय करते है। इस प्रकार रस और भाव ही परस्पर मिलकर अभिनय की पूर्णता के कारण बनते है। भरतमुनि ने भाव एवं रस के सम्बंध के बारे में उदाहरण स्पष्ट करते हुए कहा है कि जिस प्रकार किसी वृक्ष का मूल कारण बीज होता है बीज को बौने पर ही वृक्ष उत्पन्न होता है तदनन्तर उसमें पुष्प तथा फल लगते है इस प्रकार बीज ही वृक्ष, पुष्प, फल आदि सभी का मूल कारण होता है। उसी प्रकार काव्य एवं नाट्य का भी मूल कारण 'रस' ही होता है। उस 'रस' पर भी विभाव, अनुभाव, संचारी भाव एवं स्थायी भावों की निर्भरता होती है।
भरतमुनि के अनुसार आठ रस प्रमुख माने गये है –

''शृंङ्गारहास्य करूणा रौद्रवीर भयानकाः।
वीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः।।''[3]

हनुमन्नाटकम्
महाकवि श्रीहनूमत्प्रणीतं यह नाटक रसिकोपासकों का एक परम प्रिय ग्रंथ है। हनुमन्नाटक संस्कृत के उन कतिपय ग्रन्थों में से एक है। जिसकी काव्यमालिका में अन्य कवियों के श्लोकों को भी गुम्फित किया गया है। हनुमन्नाटक के दो संस्करण उपलब्ध है पहले और प्राचीनतम संस्करण के रचयिता दामोदर मिश्र है।''[4] दूसरे संस्करण के कर्त्ता मधुसूदनदास है। जनश्रुति के अनुसार ''यह नाटक जिसे स्थितिप्रिय वाल्मीकि ने समुद्र में फिकवा दिया था। राजा भोज (10वीं–12वीं शताब्दी) में इसे निकलवा कर दामोदर मिश्र द्वारा संकलित कराया था।''[5]
इस नाटक में चौदह अंक प्राप्त होते है। यह नाटक पूरा रामचरित पर आधारित है। किन्तु इसका मूलाधार हनुमान द्वारा विरचित ''हनुमन्नाटक'' ही है। इस बात की पुष्टि ग्रन्थ के समापन पर की गई है यथा –

''रचितमनिलपुत्रेणाऽथ वाल्मीकिनाऽब्धौ
निहितममृतबुद्धया प्राङ्महानाटकं यत्।
सुमतिनृपतिभोजेनोद्धृतं तत्क्रमेणा।
ग्रथितमवतु विश्वं मिश्रदामोदरेण।।''[6]

हनुमन्नाटक में वर्णित रस

हनुमन्नाटक एक अति विशाल नाटक है। इस नाटक में रामायण की कथा का वर्णन किया गया है। हनुमन्नाटकम् के अत्यन्त विशाल होने के कारण अनेक रसों का समावेश हुआ है। 'हनुमन्नाटकम्' वीररस प्रधान होने के कारण वीर रस का प्रयोग अधिक दृष्टिगत होता है। अन्य रसों का भी भरपूर प्रयोग किया गया है।

शृंगार रस

'हनुमन्नाटक' में शृंगार रस का वर्णन किया है किन्तु अन्य सभी रसों का भी यथा–स्थान समुचित महत्त्व दिया गया है। नाटक में शृंगार रस दोनो पक्षों का सुन्दर परिपाक हुआ है। उन्होंने दोनो पक्षों को बड़ी भावुकता के साथ उभारा है। 'हनुमन्नाटक' के द्वितीय अंक के उन्नीसवें श्लोक में राम तथा सीता की प्रणय लीला का वर्णन किया गया है जिसमें शृंगार रस द्रष्टव्य है –

''निद्रालुस्त्रीनितम्बाम्बरहरणरणन्मेखलारावघावत्
कन्दर्पारब्धबाणव्यतिकरतरलाः कामिनो यामिनीषु।
तारङ्कोपान्तकान्तग्रथित मणिगणोद्गच्छदच्छ प्रभाभि।
र्व्यक्ताटास्तुग्कम्पा जघनगिरिदरीमाश्रयन्ते श्रयन्ते।।''[7]

अर्थात् नींद में माती स्त्रियों के चूतड़ पर पड़े कपड़े को हटाते ही करधनी की आवाज होने से दौड़ जाने वाले कामदेव के चढ़ाए हुए तीर के सम्पर्क से काँपते हुए कामी लोग तरकी (कर्णभूषण) के चारों ओर जड़े हुए जवाहरातों से निकलती हुई कान्ति से जिसके शरीर की आभा झलक रही हो ऐसी काँपते हुए जंघा रूपी पहाड़ की गुफा का आश्रय लेकर रात का समय काटते है। प्रस्तुत उदाहरण में शृंगार रस स्पष्टतः परिलक्षित हो रहा है।

शृंगार रस – शृंगार रस के दो भेद होते है – (1) संयोग शृंगार (2) विप्रलम्भ शृंगार।

(1) संयोग शृंगार

इस सम्भोग शृंगार भी कहा जाता है। 'हनुमन्नाटक' के द्वितीय अंक में राम–सीता की शृंगारिक चेष्टाओं में संयोग शृंगार की छटा द्रष्टव्य है। 'हनुमन्नाटक' के द्वितीय अंक के ग्यारहवें, बारहवें, अठारहवें तथा अठाईसवें श्लोक में संयोग रस की पराकाष्ठा दर्शनीय है। संयोग शृंगार का वर्णन हनुमन्नाटक के द्वितीय अंक में राम और सीता के मिलन का प्रसंग मिलता है। संयोग पक्ष में नायक–नायिका एकान्त विहार में मिलन प्रसंग अत्यन्त ही रमणीय होता है। जब सीता और राम नायक–नायिका के रूप में एकान्त विहार में जब मिलते है तब संयोग शृंगार (रति) के रूप में पूर्ण रूप से प्रकट होता है जिसका विवेचन इस श्लोक में दिग्दर्शित किया गया है–

''तदनु जनकपुत्रीवक्त्रमालोक्य रामः
पुनरपि पुनरेवाघ्राय चुम्बन् न तृप्तः।
स्तनतटभुजमूलोरः स्थलं रोमराजि
मदनसदनमासीच्चुबितं पंचबाणः।।''[8]

अर्थात् सीता के मुँह को निरख कर बार–बार सूंघ कर और चुम्बन करके भी राम अघाए नहीं। उन्होंने सीता के स्तनों, पुट्ठो, हृदय, पेट के जरा ऊपर सिकु ड़न वाले भाग तथा काम मन्दिर का चुम्बन किया जिसे पंचबाण कहते है। संयोग शृंगार का एक ओर उदाहरण यहाँ अवलोकित किया गया है–

''सीतां मनोहरतरां गिरमुद्गिरन्ती
मालिङ्ग्य तत्र बुभुजे परिपूर्णकामः।
रामस्तथा त्रिभुवनेऽपि यथा न कोऽपि
रामां भुनक्ति बुभुजे न च भोक्ष्यतीशः।।''[9]

अर्थात राम (प्रसन्न होकर) मन को हरने वाली बोली बोलती हुई सीता को छाती से लगाकर उस शयनागार में परिपूर्ण काम राम ने इस तरह उपभोग किया जैसा कि पति होकर भी कोई व्यक्ति अपनी कामिनी के साथ त्रिभुवन में न तो इस समय भोगता है न पहिले ही किसी ने भोगा ओर न कोई भविष्य में भोगेगा।

(2) विप्रलम्भ शृंगार – इस वियोग शृंगार भी कहा जाता है। 'हनुमन्नाटक' के पंचम अंक में पहले, तीसरे, पाँचवे, दशवें, ग्यारहवें तथा अड़तीसवें श्लोकों में विप्रलम्भ शृंगार रस की पराकाष्ठा दर्शनीय है। राम सीतहरण से पीड़ित होकर प्रलाप करते है और नदी पर्वतों वृक्षों आदि से सीता के बारे में पूछते है और अपने पूर्व प्रेम को याद करते हुए सीता के वियोग में अपनी विरहदशा का वर्णन करते हुए इस श्लोक में कहा गया है कि –

''रे वृक्षाः! पर्वतस्था गिरिगहनलता वायुना वीज्यमाना
रामोऽहं व्याकुलात्मा दशरथतनयः शोकशुक्रेण दग्धः।
बिम्बोष्ठी चारूनेत्री सुविपुलजघना बद्घनागेन्द्र काञ्ची
हा! सीता केन नीता मम हृदयगता केन वा कुत्र दृष्टा।।''[10]

प्रस्तुत श्लोक में सीता आलम्बन, राम आश्रय, राम का सीता के प्रति विरह दशा उद्दीपन, कुन्दरू के समान लाल होठ वाली, सुन्दर नयन वाली, आदि अनुभाव तथा विषाद, मोह, आलस्य जड़ता आदि व्याभिचारिभावों के संयोग से 'वियोगरति' स्थायी भाव 'विप्रलम्भ शृंगार के रूप में अभिव्यक्त हुआ है। 'हनुमन्नाटक' में सीताराम के प्रेम को कही पर संयोग शृंगार एवं कही पर वियोग शृंगार के माध्यम से कवि ने उत्कष्ट् शैली को दर्शाया है। विप्रलम्भ शृंगार का एक उदाहरण दृष्टव्य है –

''अहह! जनकपुत्रीवक्त्रमुद्रामपश्यन्
वज्रति परमहंसो नाक्षमो वाऽपि गन्तुम्।
तदुरूविरहवह्निज्वालया दग्धदेहः
किमुत पवनसूनोर्भूषणौः स्तम्भितो मे।।''[11]

अर्थात् हाय! जनककुमारी के मुख के भाव को न देखते हुए भी मेरा प्राण न तो निकल ही रहा है और न निकलने में ही समर्थ है, सो महान् वियोगान्नि की लपट मे मेरा शरीर झुलस गया हो या पवन कुमार के दिए आभूषणों के कारण अटक गया हो। प्रस्तुत उदाहरण में श्रीराम का वियोग स्पष्टतः परिलक्षित हो रहा है।

(2) हास्य रस

'हनुमन्नाटक' के षष्ठ अंक में हास्य रस की मनोरम पूर्ण अभिव्यक्ति की गई है। 'हनुमन्नाटक' के षष्ठ अंक में पैतालीसवें श्लोक में कहा गया है कि लंका में 'विभीषण की पत्नी' सरमा नामक एक धर्मपरायणता राक्षसी ने सीताजी से जो कहा है उसका विवेचन इस श्लोक में दृष्टिगत है –

''विभेमि सखि! संवीक्ष्य भ्रमरीभूतकीटकम्।
तद्धयानादागते पुंस्त्वे तेन सार्धं कुतो रतिः।।''[12]

प्रस्तुत श्लोक में सीताजी आलम्बन, धर्मपरायणा राक्षसी सरमा आश्रय, भौरें के ध्यान से भौरां बन जाने वाले कीड़े को देखकर डरना आदि अनुभाव तथा रोमांच, चपलता उद्वेग आदि व्याभिचारिभावों के संयोग से 'हास' नामक स्थायी भाव हास्य रस के रूप में निष्पन्न हुआ है।

(3) करूण रस

'हनुमन्नाटक' के तीसरे, बारहवें तथा तेरहवें अंक में 'करूण रस' की अभिव्यक्ति हुई है। तीसरे अंक में कैकयी द्वारा दशरथ से राम को वनवास और भरत को राज्याभिषेक माँगने पर जब राम वन

को प्रस्थान करते है तब भरत प्रेम विभोर होकर कहता है कि मैं सभी दुःखों को सहन कर सकता हूँ लेकिन राम के वियोग को सहन नहीं कर सकता हूँ। भरत ने इस श्लोक में यह भाव प्रकट करते हुए कहा –

''हा तात! मातरहह! ज्वलितानलो मां
कामं दहत्वशनिशैलकृपाणबाणः।
मन्थन्तु तान्विषहते भरतः सलीलं
हा! रामचन्द्र पदयोर्न पुनवियोगम्।।''[13]

प्रस्तुत श्लोक में दशरथ, कैकेयी, आलम्बन, आश्रय भरत, राम के वनवास जाने पर भरत का करूण–विलासपूर्वक भाव अनुभाव तथा विषाद्, मोह, जड़ता, उन्माद आदि व्याभिचारि भावों के संयोग से 'शोक' स्थायीभाव करूण के रूप में अभिव्यक्त हुआ है।
'हनुमन्नाटक' में करूण रस की सर्वोच्चता इस श्लोक में दिग्दर्शित की है –

''हा वत्स लक्ष्मण! धिगस्तु समीरसूनुं
यस्त्वां रणेऽपि परिहृत्य पराङ्मुखोऽभूत्।
गोपायतीह भरतस्तु ममाऽनुजः किं
यस्त्वामधिज्य धनुरूद्धतशक्ति पातात्।।''[14]

राम ने कहा – हे भाई लक्ष्मण! पवनतनय को धिक्कार है जो तुम्हें संग्राम में छोड़कर, पीठ दिखाकर चले गये। इस जगह यदि हमारे छोटे भाई भरत होते तो वे धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाकर, इस प्रचण्ड शक्ति के गिरते–गिरते तुम्हें अवश्य बचा देते। अर्थात् राम अपने भाई लक्ष्मण को शक्ति लगने पर विलाप करते है और उन्हें इस अवसर पर भरत का स्मरण हो आता है।

(4) रौद्र रस – 'हनुमन्नाटक' के पहले, सातवें, आठवें, तेरहवें अंक में रौद्र रस का स्वरूप अभिव्यक्त किया गया है। हनुमन्नाटक के सातवें अंक के अठारहवें श्लोक में यह दिग्दर्शित किया गया है कि राम क्रोधित होकर लक्ष्मण से अपना धनुष बाण लाने के लिए कहते है – जिसका वर्णन इस प्रकार है –

''चापमानय सौमित्रे! राघवेऽधिज्यधन्वनि।
समुद्रं शोषयिष्यामि पदा गच्छन्तु वानराः।।''[15]

प्रस्तुत श्लोक में लक्ष्मण आलम्बन, राम, आश्रय, क्रोध करना, क्रोधित होकर लक्ष्मण से अपना धनुष बाण माँगना अनुभाव तथा उग्रता, आवेग, असूया आदि व्याभिचारि भावों के संयोग से 'क्रोध' स्थायीभाव पूर्ण होकर 'रौद्र' रस के रूप में परिणत हुआ है।
'हनुमन्नाटक' के तेरहवें अंक में प्रारम्भ में ही रौद्र रस का परिणाम दिखाई देता है कि रावण मेघनाद की मृत्यु से क्रोधित होकर लक्ष्म्ण पर वीरनाशिनी शक्ति का प्रहार करता है। इसका विवेचन इस श्लोक में दिग्दर्शित किया गया है –

''लंटेश्वरः सुतवधारूणवक्त्रचक्र
स्तत्रैकवीरनिधनां क्षिपति स्म शक्तिम्।
सौमित्रिवक्षसि रूचार्घपथे ज्वलन्तीं
क्षिप्ताऽम्बुधौ हनुमता तरसा गृहीत्वा।।''[16]

'हनुमन्नाटक' के आठवें अंक में तेरहवें, सोलहवें तथा इक्तालीसवें श्लोक में 'रौद्र रस' की पूर्ण रूप से अभिव्यक्ति की गई है। जब अंगद राम–रावण से पूर्व लंका में दूत बनकर जाता है तब रावण अपने गुणों की प्रशंसा करता है और राम के गुणों की अवहेलना करता है –

''यद्ग्राः किल बालतालतखो रामेण सार्द्रत्वच
श्छिन्नं यत्र पुरातनं शिवधनुस्तद्वीर्य मुद्दिश्यते।
नासीदेतदनागतं श्रुतिपथे स्वर्लोकधूमध्वजः
पौलस्त्यः करकन्दुकीकृतहरक्रीड़ाचलो रावणः।।''[17]

वीर रस – 'हनुमन्नाटक' वीररस प्रधान होने के कारण वीररस का प्रयोग अधिक दृष्टिगोचर होता है। वीररस के चार भेद होते हैं – दानवीर, धर्मवीर, युद्धवीर तथा दयावीर। 'हनुमन्नाटक' में सबसे ज्यादा वीररस की अभिव्यक्ति देखी जाती है किन्तु युद्धवीर का प्रयोग सर्वाधिक हुआ है।
'हनुमन्नाटक' के छठें, बारहवें तथा चौदहवें अंक में वीररस की पराकाष्ठा दर्शनीय है। 'हनुमन्नाटक' के छठें अंक में चौथा, पाँचवा तथा छठे श्लोक में वीररस का प्रयोग किया गया हैं। रावण द्वारा हरण की गयी सीता को राम जगह–जगह ढूँढते है सीता को ढूँढते–ढूँढते राम की भेंट हनुमान से होती है राम हनुमान से सीता को ढूँढते के लिए कहते है –

''देवाऽऽज्ञापय किं करोमि? सहसा लङ्कामिहैवानये
जम्बूद्वीपमितो नये? किमथवा वारी निधिं शाषयें।
हेलोत्पाटित विन्ध्य–मन्दर–गिरिस्विर्ण–त्रिनेत्राचल
क्षेपक्षुण्णविवर्तमानसलिलं बध्नामि वारां निधिम्।।''[18]

प्रस्तुत श्लोक में राम आलम्बन, हनुमान आश्रय, हनुमान द्वारा वीरता का भाव प्रकट करना अनुभाव तथा हर्ष, औत्सुक्य आदि व्याभिचारिभावों के संयोग से पूर्णता को प्राप्त होने वाला 'उत्साह' स्थायीभाव 'वीररस' के रूप में अभिव्यक्त हुआ है।
'हनुमन्नाटक' के द्वादश अंक में राम द्वारा कुम्भकरण की मृत्यु के पश्चात मेघनाद युद्ध में अपना शौर्य प्रकट करता हुआ अपने चाचा कुम्भकरण की मृत्यु का बदला लेने के लिए राम को ढूँढता है और युद्ध के प्रति वीरता एवं उत्साह का वर्णन करता है इस श्लोक में वीरता के वर्णन में वीररस की अभिव्यक्ति दर्शनीय है –

''क्षुद्राः! सन्त्रासमेते विजहत हरयो! भिन्नशक्रेभकुम्भा
युष्मद्देहेषु लज्जां दधति परमयी सायका निष्पतन्तः।
सौमित्रे! तिष्ठ, पात्रं त्वमसि मग रूषा, नन्वहं मेघनादः
किंचिद् भ्रूभङ्गलीलानियमित जलधिं राममन्वेषयामि।।''[19]

प्रस्तुत श्लोक में मेघनाद आश्रय, वानर तथा लक्ष्मण आलम्बन, लक्ष्मण का मेघनाद के प्रति क्रोध करना उद्दीपन, मेघनाद द्वारा भौहें टेढ़ी करना, गर्व–प्रदर्शन करना अनुभाव तथा मेघनाद का गर्व, हर्ष, औत्सुक्य आदि व्यभिचारिभावों के संयोग से 'युद्ध उत्साह' स्थायीभाव 'युद्धवीर' रस के रूप में परिणत हुआ है।
'हनुमन्नाटक' के चौदहवें अंक में राम की वीरता का परिणाम दिखाई देता है –

''पैतामहं रघुपतिः समरेऽतिकोपा
द्वाणं मुमोच हृदये दशकन्धरस्य।
भित्त्वा स तद्धृदय शोणित शोणगात्रः
प्राणन् विवेश धरणीतलमस्य नीत्वा।।''[20]

अर्थात् रामजी ने अत्यन्त क्रोध से पितामह ब्रह्मा के बाण को दशानन के वक्षस्थल में लक्ष्य कर छोड़ दिया था। वह बाण उसके अन्तस्थल के रक्त से आप्लावित शरीर वाला होकर उसके जीवन को लेता हुआ धरातल में घुस गया।

भयानक रस

'हनुमन्नाटक' में भयानक रस का प्रयोग कुछ ही स्थानों पर हुआ है। 'हनुमन्नाटक' के चौथे अंक का तीसरा श्लोक में जब राम मृग

के पीछे भाग रहे है – इस समय मृग की दशा का चित्रण करते हुए राम लक्ष्मण से कहते हैं कि यह मृग हम लोगों को बहुत दूर ले आया। देखो, अब भी यह पीछा करते हुए रथ पर बार–बार गर्दन मोड़कर मनोहर दृष्टिपात करता हुआ, बाण लगाने के भय से अपने अधिकांश पृष्ठ भाग को पूर्वभाग की ओर समेटे हुए, थकावट के कारण मुँह से गिरते आधे चबाए हुए कुशों से मार्ग से व्याप्त करता हुआ, ऊँची कूद के कारण आकाश में अधिक और पृथ्वी पर कम चल रहा है –

''ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्पन्दने बद्धदृष्टिः
पश्चार्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद्भूयसा पूर्वकायम्।
दर्भैरर्धावलीढैः श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः कीर्णवर्त्मा,
पश्योदग्रप्लुतत्त्वाद्वियति बहुतरं स्तोकमुर्त्याप्रयाति।।'[21]

प्रस्तुत श्लोक में लक्ष्मण आलम्बन, राम आश्रय, बार–बार गर्दन मोड़कर मनोहर दृष्टि करता हुआ, बाण लगने के भय से अधिकांश पृष्ठ भाग पूर्वभाग की और समेटना, परिश्रम के कारण मुँह में अर्ध चबाए हुए कुशों का मार्ग में गिरना आदि अनुभाव तथा भय, त्रास, विषाद, व्याधि आदि व्यभिचारिभावों के संयोग से 'भय' स्थायीभाव पूर्णरूप से 'भयानक रस' के रूप में परिणत हुआ है।

अद्भुत रस

'हनुमन्नाटक' के पहले तथा चौदहवें अंक में अद्भुत रस का स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। इस नाटक के पहले अंक का सत्ताईसवें श्लोक में राम द्वारा शिव धनुष को तोड़ने का वर्णन दर्शनीय है –

''त्रुटयद्भीमधनुः कठोरनिनदस्तत्राऽकरोद्विस्मयं
त्रस्यद्वाजिरवेरमार्गगमनं शम्भोः शिरः कम्पनम्।
दिग्दन्तिस्खलनं कुलाद्रिचलनं सप्तार्णवोन्मेलनं
वैदेहोमदनं मदान्धदमनं त्रैलोक्यसम्मोहनम्।।'[22]

राम द्वारा शिवधनुष को तोड़ने पर सूर्य के घोड़े उटपटांग राह से जाने लगे, शिव का सिर हिल गया, दिग्गज घबरा उठे, पर्वत हिलने लगे, सातों सागर उछल–उछल कर आकाश में जाकर एक हो गए, जानकी जी मोहित हो गयी, मदान्ध राजाओं का गर्व चूर–चूर हो गया अर्थात् शिव धनुष भंग का शब्द सुनकर सभी अपनी स्थिति से विचलित हो गए और आश्चर्यचकित रह गए।

प्रस्तुत श्लोक में राम आलम्बन, राम द्वारा शिवधनुष भंग का शब्द सुनकर विचलित करना उद्दीपन, सूर्य के घोड़ों का घबड़ाना, शिव का सिर हिलना, पर्वतों का हिलना, जानकीजी का मोहित होना आदि अनुभाव तथा हर्ष, आवेग और घृत्ति आदि व्यभिचारिभावों के संयोग से पूर्णता को प्राप्त 'विस्मय स्थायीभाव' 'अदभुत रस' के रूप में परिणत हुआ है।

'हनुमन्नाटक' चौदहवें अंक का सड़सठवें (67) श्लोक में सीताजी पुल के बारे में बड़े आश्चर्य के साथ राम को पूछती है –

''दृष्टोऽयं सरितां पतिः प्रियतम। कास्ते स सेतुः परं
क्वेति क्वेति मुहुर्मुहु सकुतुकं पृष्ठे परं विस्मिते।
अत्राऽऽसीदयमत्र नाऽत्र किमिति व्यग्रे निजप्रेयसि
व्यावृत्तास्य सुधानिधिः सम्भवन्मन्दस्मिता जानकी।।'[23]

प्रस्तुत श्लोक में राम आलम्बन, रामजी द्वारा उनके मुखचन्द्र को ढक लेना उद्दीपन, लहरों द्वारा ढांका हुआ पुल, सीताजी का मुस्कराना, आश्चर्य चकित होना, खुश होना आदि अनुभाव तथा साफ–साफ दिखलाई देना, हर्ष, आवेग औत्सुक्य आदि व्याभिचारिभावों के संयोग से 'विस्मय' स्थायीभाव 'अद्भुत रस' के रूप में दिखाई देता है।

इस प्रकार 'हनुमन्नाटक' में वीररस प्रधान होने के कारण वीररस का प्रयोग अधिक दृष्टिगत होता है। श्रृंगार, हास्य, करूण, रौद्र, अद्भुत, भयानक आदि रसों का भी भरपूर वर्णन किया है। तथा कवि ने इस प्रक्रिया के विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

सन्दर्भ–

1. नाट्यशास्त्र, आचार्य भरतमुनि (व्या.– डॉ.यशवंत कुमार जोशी) 6/31, पृ. 55
2. नाट्यशास्त्र, आचार्य भरत (व्या.– प्रो.बाबूलाल शुक्ल शास्त्री) 6/32, वृति पृ. 228 चौखम्बा संस्कृत सीरीज वाराणसी, 1972
3. वही, 6/16, पृ. 218
4. संस्कृत साहित्य का समालोचनात्मक इतिहास, पृ. 147
5. हनुमन्नाटक (चौखम्बा प्रकाशन) भूमिका पृ. 10
6. हनुमन्नाटक – 14/96, पृ. 233
7. वही – 2/19, पृ. 31
8. वही – 2/18, पृ. 30
9. वही – 2/28, पृ. 34
10. वही – 5/10, पृ. 56
11. वही – 5/38, पृ. 70
12. वही – 6/45, पृ. 99
13. वही – 3/5, पृ. 39
14. वही – 13/11, पृ. 182
15. वही – 7/18, पृ. 105
16. वही – 13/1, पृ. 178
17. वही – 8/41, पृ. 122
18. वही – 6/4, पृ. 83
19. वही – 12/2, पृ. 170
20. वही – 14/42, पृ. 213
21. वही – 4/3, पृ. 48
22. वही – 1/27, पृ. 10
23. वही – 14/67, पृ. 224